

रामकृष्ण चरण सरोजे

कौमुदिखामाज-एकताल

रामकृष्ण चरण सरोजे, मजोरे मन मधुप मोर।

कण्टके आवृत विषय केतकी, थेको ना थेको ना ताहे बिभोर॥

जनम-मरण विषम-व्याधि, निरबधि कतो सोहिबे आर।

प्रेम पियूष पियोरे श्रीपदे, भवेरि यातना रबे ना तोर॥

धर्मा-धर्म सुख-दुःख शान्ति-ज्वाला, द्वन्द्व खेला माझे नाहि निस्तार।

ज्ञान कृपाणे, परम जतने, काटोरे-काटोरे करम डोर॥

रामकृष्ण नाम बलोरे बदने, मोहेरि यामिनी होईबे भोर।

दुःस्वपन ज्वाला रबे-ना रबे-ना, छुटे जाबे तोर घुमेरि घोर॥

देवेन्द्रनाथ मजूमदार